P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य

सारांश

भारतवर्ष का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली रहा है, किन्तु लोक में एक सामान्य सी धारणा विद्यमान रही है कि भारतवर्ष के प्राचीन ग्रन्थों में ऐतिहासिकता का पूर्णतः अभाव है। इस प्रकार की धारणाएँ नितान्त निराधार हैं, क्योंकि वैदिक साहित्य में ऐतिहासिक तथ्य प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं।

ऋग्वेद में आर्यों के प्रमुख जनों के मध्य हुए युद्ध तथा ऋषियों द्वारा राजा, रानी एवं सम्पन्न व्यापारियों के द्वारा समय–समय पर दिये जाने वाले दान की प्रसंशा तत्कालीन ऐतिहासिकता के ज्वलन्त उदाहरण हैं। इसी तरह यजुर्वेद व अथर्ववेद में तत्कालीन ऐतिहासिक तथ्य पाये जाते हैं।ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों तथा उपनिषदों में निहित धार्मिक तथा दार्शनिक तथ्यों से प्राचीन भारत की ऐतिहासिकता के प्रमाण मिलते हैं।

स्पष्ट है कि आज के सहस्रों वर्ष पूर्व हमारे वैदिक ऋषियों ने जो तत्कालीन समाज का चित्रण किया है, राजाओं के मध्य हुए पारस्परिक युद्धों का वर्णन किया है तथा समय–समय पर भिक्षुकों, श्रेणियों को दिये गये दान आदि की जो प्रसंशा की है, इन सबसे यह स्पष्ट होता है कि वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं।

मुख्य शब्द : वैदिक साहित्य, ऋषि, युद्ध, दान, उपनिषद्, ऐतिहासिक तथ्य।

जय सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला पी0जी0 कालेज,
अम्बारी, आजमगढ,
उ0प्र0, भारत

प्रस्तावना

वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य

भारतवर्ष के प्राचीन निवासी लेखन कला से अच्छी तरह परिचित थे और उन्होंने अनेक विषयों पर उत्तम कोटि के ग्रन्थ लिखे थे, परन्तु आधुनिक ढंग के इतिहास पर कोई भी प्राचीन ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। सम्भवतः इसी कारण पाश्चात्य विद्वानों ने प्राचीन भारतीयों में इतिहास लिखने की प्रवृत्ति का अभाव समझा है, किन्तु ऐसा समझना निराधार है। भारतीय लोग इतिहास का ज्ञान रखते थे तथा उसका महत्व समझते थे।इतिहास का आदर भारत में सदा से होता आया है और उसको पाँचवाँ वेद माना गया है। फिर भी उनकी इतिहास की कल्पना भिन्न थी। वे पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र सभी को इतिहास के अन्तर्गत समझते थे। साथ ही वे तिथिक्रम की अपेक्षा युग परम्परा को और घटनाओं की अपेक्षा विचार–धाराओं को अधिक महत्व देते थे। देश के सहस्रों वर्षों के इतिहास में तिथियों और तारीखों का कोई महत्व नहीं था। इसलिए तिथिक्रम से लिखा हुआ इतिहास नहीं मिलता, ऐतिहासिक व्यक्तियों का स्थान, सत्य, सिद्धान्त और रूपक आदि ले लेते थे। इसलिए केवल युग–प्रवर्तक पुरुषों के ही सम्बन्ध में विशेष रूप से लिखा मिलता है, परन्तु यह सब होते हुए भी भारत के प्राचीन साहित्य में इतिहास की बहुत सामग्री भरी हुई है। [1]

प्रारम्भिक आर्यों के उदय और राजनीतिक प्रसार का इतिहास हमको पुराणों की अनुश्रुतियों में मिलता है,जिसका समर्थन वेदों के प्रासंगिक संकेतों से भी होता है। परन्तु आर्यों के समूचे जीवन – उनकी सभ्यता , संस्कृति और धर्म का चित्र खींचने के लिए उस समय के साहित्य 'वेद' का सहारा लेना पडता है, क्योंकि वेद ही इनके प्राचीनतम् ग्रन्थ हैं और इन्हीं को भारतीय आर्यों के प्राचीनतम् इतिहास के लिए बडा ही उपयोगी माना गया है। इसी साहित्यिक अर्थ में इस युग को वैदिक काल कह सकते हैं। यह काल पुराणों के अनुसार पंचानबे पीढियों अथात् लगभग 2000 वर्षों का है। इतने लम्बे काल में आर्यों के जीवन के विकास की कई पीढियाँ बीतीं।इसलिए उनके जीवन की एक बात सभी पीढियों पर लागू नहीं है।

इस काल के आर्यों ने भौतिक और आधिभौतिक जगत् को जैसे देखा, समझा और अनुभव किया उसका उद्गार प्रायः गीतों (मंत्रों) में हुआ। उन सबका सामूहिक नाम वेद है। 'वेद' का अर्थ 'ज्ञान' है। वास्तव में आर्यों के ज्ञान का

संग्रह वेद में है। वेद के तीन भाग हैं– (1) ऋचा या साधारण पद्य, (2) साम या यज्ञ के अवसरों पर लय के साथ गाने योग्य गीत ओर (3) यजुष् अर्थात् यज्ञ की विधियों से सम्बन्ध रखने वाले गद्य– भाग। इन सबको मिलाकर मंत्र भी कहते हैं। श्रद्धालु हिन्दू मानते हैं कि वेद अपौरुषेय हैं और उनका कोई कर्ता नहीं है; उनका साक्षात्कार ऋषियों को हुआ था, जिनके नाम वैदिक सूक्तों के साथ लगे हुए हैं। सच बात तो यह है कि वैदिक मंत्रों की रचना करने वाले ऋषियों (प्राचीन कवियों) को ही मंत्र–दृष्टा कहा गया है। पुराणों में अयोध्या की जो वंशावली दी हुई है, उसकी अट्ठारहवीं–उन्नीसवीं पीढी से प्रायः वैदिक मंत्रों की रचना प्रारम्भ हो गयी थी और अडसठवीं पीढी (राजा सुदास) और उनके दो–तीन पीढी बाद तक यह कार्य होता रहा। अभी तक वैदिक साहित्य छन्दों में बिना क्रम के था।ऋषियों के परिवार की स्मृति से ही उसका संरक्षण होता था। इसी समय वर्णमाला और लिपि का आविष्कार हुआ। इसकी सहायता से वैदिक मंत्रों का संग्रह प्रारम्भ हो गया। यह प्रक्रिया महाभारत के युद्ध तक जारी रही। वेदों का अन्तिम संकलन, संपादन और वर्गीकरण महर्षि वेदव्यास ने किया, जो महाभारत युद्ध के समय जीवित थे। उनके वर्गीकरण के अनुसार (1) ऋक्, (2) साम और (3) यजुष् को मिलाकर 'त्रयी' तथा (4) अथर्ववेद और (5) इतिहास को लेकर पाँच वेद हैं। वेदों में अधिकांश देवताओं की स्तुतियाँ, प्राकृतिक दृश्यों का वर्णन, रूपक शैली में विश्व के रहस्य का उद्घाटन और कहीं–कहीं 'नाराशंसी' (प्रसिद्ध व्यक्तियों के गुणगान) हैं। वेद संसार का प्राचीनतम् साहित्य है। इनमें ऋषियों की प्रतिभा गीत रूप से उस समय मुखरित हुई थी, जब संसार के कई देशों में बोलियों का भी ठीक तरह से विकास नहीं हुआ था।[2]

हमारे प्राचीनतम् ग्रन्थ वेदों में विश्व का सम्पूर्ण ज्ञान अनुस्यूत है। तत्कालीन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति का वर्णन वेदों में प्रचुर मात्रा में निहित हैं। वैदिक ऋषि अर्थपूर्ण दार्शनिक,उच्च कोटि के वैज्ञानिक तथा तथ्यों के आधार पर वर्णन करने वाले इतिहासकार भी थे। इसीलिये उनके वर्णनों में तत्कालीन ऐतिहासिकता के पर्याप्त के साक्ष्य विद्यमान हैं।

प्राचीनतम् वेद ऋग्वेद के माध्यम से पूर्व वैदिक युग का ज्ञान होता है। ऋग्वेद में कुल 10414 ऋचाएँ, 1017 सूक्त एवं 10 मण्डल हैं। ऋचाओं या मंत्रों के समूह को सूक्त कहते हैं। ऋग्वेद का समय भारतीय इतिहास में सांस्कृतिक संगम के समारम्भ का युग था।उस युग आर्य और आर्येतर संस्कृतियों को एक दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उनके मिलन की इस प्रक्रिया का परिचय तत्कालीन युद्धों के वर्णन से मिलता है, परन्तु युद्धात्मक वातावरण चिरकालीन नहीं रहता।युद्धों के पश्चात आर्य और आर्येतर वर्गों को एक–दूसरे को समझने का पर्याप्त अवसर मिलता था। इस प्रकार युद्ध के पश्चात चिर शान्ति और सुव्यवस्था की प्रतिष्ठा होती थी।[3]

ऋग्वेद में 'दाशराज्ञ' युद्ध का वर्णन आता है।जो आर्यों के दो प्रमुख जनों 'भरत' और 'पुरु' के मध्य हुआ था। भरत जन का नेता सुदास था, जिसके पुरोहित वशिष्ठ थे। इनके विरुद्ध दस राजाओं का एक संघ था जिसके पुरोहित विश्वामित्र थे। सुदास ने रावी नदी के तट पर दस राजाओं के इस संघ को परास्त किया था और इस प्रकार वह ऋग्वैदिक भारत का चक्रवर्ती सम्राट बन बैठा।[4] ऋग्वेद में ही श्यावाश्य ऋषि ने अपने आश्रयदाता राजा तरन्त और उनकी विदुषी महिषी शशीयसी के दान की खूब प्रसंशा की है।[5] ऐतिहासिक दृष्टि से अथर्ववेद का महत्व इस बात में है कि इसमें सामान्य मनुष्यों के विचारों तथा अन्धविश्वासों का विवरण मिलता है–

For the history of Indian people of the Vedic Age the Atharvavede is certainly the most important and interesting of the four Samhitas describing as it dose, the popular belief and superstitions of the humble folk. [6]

इसमें विविध विषयों जैसे – रोग निवारण, समन्वय, राजभक्ति, विवाह, तथा प्रणय–गीतों आदि के विवरण सुरक्षित हैं। कुछ मन्त्रों में जादू– टोने का भी वर्णन है जो इस बात का सूचक है कि इस समय तक आर्य– अनार्य संस्कृतियों का समन्वय हो रहा था। अथर्ववेद में परीक्षित को कुरुओं का राजा कहा गया है तथा कुरु देश की समृद्धि का अच्छा चित्रण है। इसमें परीक्षित के राज्य काल में अनुभूयमान सौख्य की विपुल प्रसंशा के कतिपय मंत्रों का उल्लेख है।[7]

अथर्ववेद में उत्तर वैदिक कालीन समाज की रूढियों, अंधविश्वासों तथा मान्यताओं का चित्रण है।इसमें वशीकरण, पारिवारिक सौमनस्य, गृह कलह तथा जादू–टोने के मंत्र होने से यह सिद्ध होता है कि उस समय के समाज में इस प्रकार की रूढियाँ समाहित हो चुकी थीं। लोग इस तरह के आडम्बरों में विश्वास करते थे।

ऐतिहासिक दृष्टि से चारों वेदों की उपादेयता है, किन्तु ऋग्वेद और अथर्ववेद का महत्व इस दृष्टि से सामवेद व यजुर्वेद की अपेक्षा अधिक है।ऋग्वेद से हमें भारत में आर्यों के प्रसार, उनके आन्तरिक तथा बाह्य संघर्ष तथा उनके राजनीतिक और सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में काफी जानकारी होती है। अथर्ववेद की उपादेयता आर्यों की सांस्कृतिक प्रगति के विविध रूपों का इतिहास प्रस्तुत करने में की जाती है। भारतीय परम्परा के अनुसार वेद सम्पूर्ण भारतीय जीवन धर्म, दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान आदि का मूल स्रोत हैं। भारतीय इतिहास की आधारशिलाएँ वैदिक साहित्य में स्पष्ट रूप से दिखाई पडती हैं।

वेदों के बाद ब्राह्मण ग्रन्थों में यज्ञों का सविस्तार वर्णन और वैदिक मंत्रों का प्रयोग और उनके ऊपर आख्यान मिलते हैं। स्थान–स्थान पर राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर भी काफी प्रकाश पडता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ऐतरेय, शतपथ, गोपथ, ताण्ड्य, पंचविश आदि विशेष रूप से इतिहास के लिये उपयोगी हैं। ब्राह्मणों के अन्तिम भाग आरण्यकों में सबसे पहले स्वतन्त्र रूप से दार्शनिक प्रश्नों पर विचार किया गया है। वैदिक साहित्य का अन्तिम स्तर उपनिषदों में है।इनमें दार्शनिक समस्याओं पर विस्तृत विवेचन किया गया है। ईश, केन, कठ,

तैत्तिरीय, छान्दोग्य, वृहदारण्यक, मुण्डक तथा माण्डूक्य आदि मुख्य उपनिषद् ग्रन्थ हैं।

ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रन्थों में उत्तरवैदिक कालीन समाज तथा संस्कृति का भी चित्रण किया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक के नियम तथा कुछ प्राचीन अभिषिक्त राजाओं के नाम दिये गये हैं।विशेषतः शुनःशेष तथा ऐन्द्र महाभिषेक वाले अंशों में भी ऐसी मान्य गाथाएँ भूरिशः उद्धृत हैं।

शतपथ ब्राह्मण में गान्धार, शल्य, कैकेय, कुरु, पांचाल, कोसल, विदेह आदि के राजाओं का उल्लेख मिलता है। प्राचीन इतिहास के साधन के रूप में वैदिक साहित्य में ऋग्वेद के बाद शतपथ ब्राह्मण का ही स्थान है।[8]

छान्दोग्योपनिषद् में सनत्कुमार से ब्रह्म विद्या सीखने के समय अधीत विद्याओं में नारदमुनि ने इतिहास–पुराण को पंचम वेद बतालाया है–

ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं सामवेदमथर्वणम् इतिहास–पुराणम् पंचम वेदानां वेदम्।[9]

महर्षि यास्क ने निरुक्त में ऋचाओं के विशदीकरण के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ तथा प्राचीन आचार्यों की कथाओं को 'इतिहासमाचक्षते' कहकर उद्धृत किया है। वेदार्थ के निरूपण करने वाले विभिन्न सम्प्रदायों में ऐतिहासिकों का भी एक सम्प्रदाय था। इसका स्पष्ट परिचय निरुक्त से चलता है– 'इति ऐतिहासिकाः'

उत्तर वैदिक काल के अन्त तक भारतीय समाज, सभ्यता, संस्कृति और उसके साहित्य का बहुत विस्तार हो चुका था। बढते हुए वाङ्मय और ज्ञान का संरक्षण एक समस्या बन गयी थी। उनका वर्गीकरण और संक्षेपण आवश्यक था। जिस शैली में यह कार्य सम्पन्न हुआ उसे 'सूत्र' कहते हैं। बडे व्याख्यानों और आख्यानों की अपेक्षा इन सूत्रों का स्मरण करना सरल था।इसी शैली में इस काल का साहित्य रचा गया। छः वेदांगों में से कल्प का वर्गीकरण तीन उप विभागों में किया गया– (1) श्रौत सूत्र, (2) गृह्य सूत्र और (3) धर्म सूत्र। इस वाङ्मय द्वारा तत्कालीन इतिहास पर प्रचुर प्रकाश पडता है।

वेद के यथार्थ को समझने के लिए इतिहास पुराण का अध्ययन आवश्यक बतलाया गया है। व्यास का स्पष्ट कथन है कि वेद का उपवृंहण इतिहास और पुराण के द्वारा होना चाहिए, क्योंकि इतिहास पुराण से अनभिज्ञ लोगों से वेद सदैव भयभीत रहता है। राजशेखर ने भी उपवेदों में 'इतिहास–वेद' को अन्यतम् माना है।

कौटिल्य की इतिहास कल्पना बडी विशाल, उदात्त एवं विस्तृत है। वे सबसे पहले 'इतिहास–वेद' की गणना अथर्ववेद के साथ करते हैं और इसके अन्तर्गत पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र तथा अर्थशास्त्र का अन्तर्भाव मानते हैं–

अथर्ववेद इतिहासवेदौ च वेदाः। पश्चिमं (अर्हभागं) इतिहासश्रवणे पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं धर्मशास्त्रमर्थशास्त्रं चेतीतिहासः।[10]

वेदों में देव–स्तुति के अतिरिक्त तत्कालीन दानशील उदार राजाओं की श्लाघा भी उपलब्ध होती है, जिन्हें 'नाराशंसी' के नाम से अभिहित करते हैं। प्रभूत दान के कारण प्रत्युपकार की भव्य भावना से प्रेरित मंत्रों को दान–स्तुति की संज्ञा प्राप्त है। यद्यपि वेदों में इन दानशील राजाओं का कोई काल–क्रम वर्णित नहीं है, तथापि इस प्रकार के वर्णन प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन में सहायक अवश्य हुए हैं। विशेषकर अथर्ववेद में वर्णित सामाजिक एवं राजनैतिक व्यवस्था तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक इतिहास के वर्णन में सहायक अवश्य सिद्ध हुई है।

वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये सूत्र साहित्य का प्रणयन किया गया। श्रौत, गृह्य तथा धर्म सूत्रों में यज्ञीय विधि– विधानों , कर्मकाण्डों तथा राजनीति, विधि एवं व्यवहार से सम्बन्धित अनेक बातों का उल्लेख है। ऋग्वेद से लेकर सूत्रों तक के सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का काल ईसा पूर्व 2000 से लेकर 500 ई0 के लगभग तक सामान्य तौर पर स्वीकार किया जा सकता है।[11]

ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राचीन कीर्ति सम्पन्न राजाओं के विषय में अनेक ग्राह्य गाथाएँ भी उद्धृत की गयी हैं, जिनमें प्राचीन ऐतिहासिक राजाओं के जीवन की किसी विशिष्ट घटना का साहित्यिक उल्लेख प्राप्त होता है।

वैदिक वाङ्मय में हम जिस धर्म का सिद्धान्त रूप में दर्शन करते हैं उसी का व्यावहारिक रूप हमें रामायण और महाभारत में उपलब्ध होता है।वास्तव में रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ हैं, जिनके प्रकाश से हम अपने वैदिक धर्म के अनेक अन्धकार से आवृत तथ्यों का साक्षात करने में समर्थ होते हैं। ये दोनों ही इतिहास ग्रन्थ हैं, क्योंकि हमारे प्राचीन धर्म और हमारी प्राचीन सभ्यता में जो कुछ था, उसका सांगोपांग वर्णन इन दोनों ग्रन्थों में उपलब्ध होता है।रामायण और महाभारत का वर्तमान स्वरूप ईसापूर्व दूसरी और चौथी शताब्दी ईसवी के लगभग निर्मित हुआ।[12]

अपनी भाषा के माध्यम से जिस जन–जीवन और प्राकृतिक विभूति का वर्णन कवि के लिए अभीष्ट होता है, उसकी परिधि वैदिक काल में अतीव व्यापक थी। वेदों के वर्ण्य विषय की व्यापकता देखकर ही उसकी परिभाषा बनाई गई– विद्यन्ते एभिधर्मादिपुरुषार्थाः। अर्थात् जिनमें जीवन के सभी पक्षों का ज्ञान निर्भर है, वे वेद हैं।कवियों के मानस–पटल पर प्राचीन काल के राजाओं, ऋषियों और महापुरुषों की चरित–गाथा का वैचित्र्यपूर्ण इतिहास अंकित था।इनके अतिरिक्त देवताओं के विविधतापूर्ण व्यक्तित्व के माध्यम से उनके सम्बन्ध की कल्पना–प्रसूत अथवा ऐतिहासिक चारु–चरितावली का आख्यान समाज की अनुपम सांस्कृतिक निधि के रूप में आर्य वर्ग में सुप्रतिष्ठित था। वैदिक काल में आरम्भ से ही इन विषयों पर कवियों की रसात्मक वाक्यावली गुम्फित हुई थी।[13]

इतिहास के द्वारा वेद के अर्थ का उपवृंहण होता है। वेद का अर्थ इतना सूक्ष्म है कि उसे सूक्ष्म मति लोग ही भली – भाँति समझ सकते हैं, किन्तु इन इतिहास तथा पुराण ग्रन्थों में हम उसी सूक्ष्म अर्थ का प्रतिपादन जन–साधारण के लिए बोधगम्य, सरस तथा सरल भाषा में पाते हैं।इतिहास तथा पुराणों में जो सिद्धान्त प्रतिपादित हैं, वे सिद्धान्त वेद के ही हैं, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।हमारे समझने योग्य भाषा में लिखे जाने के कारण ये

हमारे हृदय को अधिक स्पर्श करते हैं। इस तरह वैदिक सिद्धान्तों के बहुल प्रचारक होने के कारण धार्मिक दृष्टि के साथ–साथ ऐतिहासिक दृष्टि से भी इन ग्रन्थों का महत्व है।महर्षि वेद व्यास ने इतिहास की महत्ता बताते हुए इसी बात की ओर संकेत किया है–

इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
विभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।

अध्ययन का उद्देश्य

विश्व के प्राचीनतम् ग्रन्थ वेदों तथा उनसे सम्बन्धित वैदिक साहित्य में वर्णित विभिन्न आख्यानों, तत्कालीन दानशील उदार राजाओं की श्लाघा (नाराशंसी), विभिन्न समुदायों के मध्य युद्धों के वर्णन तथा सामाजिक और धार्मिक वर्णनों आदि के आधार पर यह सिद्ध करना कि वैदिक वाङ्मय में ऐतिहासिक तथ्य प्रभूत मात्रा में पाये जाते हैं।

निष्कर्ष

वैदिक साहित्य में अनेकों ऐसी घटनाएँ आख्यानों के माध्यम से कही गयी हैं, जो इतिहास प्रसिद्ध हैं।वेदों में वर्णित संवाद, सूक्त, कथानक तथा आख्यान आदि इति वृत्तात्मक वर्णनों में इतिहास का ही मिश्रण प्राप्त होता है। ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा स्मृति, सूत्र इत्यादि में ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि संस्कृत वाङ्मय के प्राचीनतम् ग्रन्थ वेदों में ऐतिहासिक तथ्य प्रभूत मात्रा में उपलब्ध हैं।

अंत टिप्पणी

1. *प्राचीन भारत, पृष्ठ 70–71 – डॉ0 राजबली पाण्डेय*
2. *प्राचीन भारत, पृष्ठ 16 – डॉ0 राजबली पाण्डेय*
3. *संस्कृत साहित्य का आलेचनात्मक इतिहास, पृष्ठ 3, –रामजी उपाध्याय*
4. *प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ 6, –के0सी0 श्रीवास्तव*
5. *ऋग्वेद 5/61*
6. *वैदिक एज, पृष्ठ 229*
7. *अथर्ववेद, 20/127*
8. *प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ–7, –के0सी0श्रीवास्तव*
9. *छान्दोग्योपनिषद्, 7/1*
10. *अर्थशास्त्र*
11. *प्राचीन भारत का इतिहास, पृष्ठ–7, –के0सी0श्रीवास्तव*
12. *हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग–1, पृष्ठ–503– विण्टरनिट्ज संस्कृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ–8, –रामजी उपाध्याय*